B.A. Part-III, Paper-VI (Hons)

Democracy

Q- Essential Conditions for the Successful Working of Democracy.

आज प्रजातंत्र का युग है। यह सभी प्रकार की सरकारों से सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। फिर भी कुछ लोग इसकी सफलता में आज संदेह करते दीख पड़ते हैं। प्रजातंत्र एक यंत्र की तरह है जिसे सफल बनाने के लिए अनेक बातों की आवश्यकता पड़ती है। प्रजातंत्र की सफलता के लिए कई शर्तें हैं, जो निम्न हैं।

1. <u>प्रजातंत्र में विश्वास</u> — प्रजातंत्र की सफलता की पहली शर्त है, प्रजातंत्र में आस्था एवं विश्वास। यदि प्रजातांत्रिक संगठन में विश्वास ही न हो तो फिर इसकी असफलता अवश्यंभावी है।

2. <u>शिक्षा का प्रसार</u> — प्रजातंत्र की सफलता बहुत हद तक शिक्षा पर निर्भर है। शिक्षित जनता ही अपने कर्तव्य एवं अधिकारों को अच्छी तरह समझ सकती है। शिक्षित नागरिक ही मतदाता के सही अधिकारों एवं कर्तव्यों की जानकारी रखकर मतदान में सही ढंग से भाग ले सकते हैं। जे० एस० मिल का ठीक ही कहना है - Universal teaching must precede universal enfranchisement. अर्थात् मतदान को सार्वजनिक बनाने के लिए शिक्षा का द्वार सभी व्यक्तियों के लिए खुला रहना चाहिए।

3. <u>स्वतंत्रता</u> — स्वतंत्रता प्रजातंत्र की सफलता के लिए एक आवश्यक शर्त है। J. S. Mill व्यक्ति की स्वतंत्रता को सबसे अधिक महत्व देते हैं। परन्तु स्वतंत्रता का यह अर्थ नहीं है कि कोई भी व्यक्ति जो चाहे वह करे। स्वतंत्रता निरंकुशता न होकर आत्म-नियंत्रण है। स्वतंत्रता का अर्थ है कि व्यक्ति अपनी आत्मा (Self) का पूर्ण विकास करे और उसका साक्षात्कार करने में उस पर कोई बन्धन नहीं हो। सभी की स्वतंत्रता के लिए आवश्यक है कि किसी के हाथ में असीम अधिकार न हो और कोई अपने अधिकारों का दुरुपयोग न करे।

4. <u>जन-कल्याण की भावना</u> — प्रजातंत्र में नागरिकों के अन्दर जब तक सार्वजनिक कल्याण के प्रति लगाव न होगा, प्रजातंत्र सफल नहीं होगा। व्यक्तिगत तथा वर्गीय हितों से ऊपर उठकर सामान्य हितों को मान्यता देना प्रजातंत्र में नागरिकों के लिए उचित है। देश और समाज के लिए आत्मोत्सर्ग करने वाले नागरिक ही प्रजातंत्र को सफल बना सकते हैं।

5. <u>आर्थिक समानता</u> — आर्थिक समानता भी प्रजातंत्र की सफलता के लिए एक आवश्यक शर्त है। Cole ने ठीक ही कहा है — "आर्थिक समानता के अभाव में राजनीतिक स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है।" (Political liberty without economic equality is a mere myth) आर्थिक विषमता रहने से धनी एवं पूँजीपति गरीबों का मत खरीदकर शासन की बागडोर संभाल लेते हैं और शोषण, दमन एवं लूट-खसोट करने लगते हैं। समानता के अभाव में स्वतंत्रता संभव नहीं हो सकती। यह समाज में धनी और भिखारी दोनों में से किसी का भी होना अवांछित है। अतः प्रजातंत्र की सफलता के लिए आर्थिक समानता का होना अनिवार्य है।

Scanned with CamScanner

(6) सामाजिक समानता – प्रजातंत्र में सामाजिक समानता का महत्व बहुत अधिक है। भारत में ऊँच-नीच तथा छुआ-छूत का रोग बहुत है। हरिजनों को जहाँ प्रारम्भ से ही अपमानित एवं घृणित जीवन व्यतीत करना पड़ा है। उच्च वर्ग उनसे दूर रहना चाहता है। ऐसा समाज प्रजातंत्र के लिए घातक ही नहीं कलंक है।

(7) नागरिकों की सच्चरित्रता – प्रजातंत्र की सफलता के लिए नागरिकों का सच्चरित्र, जागरूक एवं सुशिक्षित होना आवश्यक है। जनता में ईमानदारी, सच्चाई, राजनीतिक जागरण, सार्वजनिक कार्यों में अभिरुचि, उत्तरदायित्व की भावना आदि गुणों का विकास होना आवश्यक है। इन गुणों के अभाव में प्रजातंत्र सफल नहीं हो सकता है। ब्राइस के शब्दों में, "जनता का आलस्य और उदासीनता प्रजातंत्र के दो प्रबल शत्रु हैं।"

(8) समाचारपत्रों की स्वतंत्रता – समाचारपत्रों की स्वतंत्रता एवं निष्पक्षता प्रजातंत्र के लिए आवश्यक है। समाचारपत्रों पर अनावश्यक सरकारी नियंत्रण रहने से प्रजातंत्र खतरे में पड़ जाता है। स्वतंत्र समाचारपत्र जनमत तैयार करने में सहायक हैं। ये राजनीतिक जागरण लाते हैं। ब्राइस के शब्दों में – "बड़े देशों में समाचारपत्रों द्वारा ही प्रजातंत्र संभव हो सकता है। प्रेसों तथा समाचारपत्रों की स्वतंत्रता का अर्थ उनकी स्वच्छंदता या मनमानी नहीं होता।

(9) राजनीतिक दल – राजनीतिक दलों का रहना प्रजातंत्र के लिए अत्यावश्यक है। राजनीतिक दल प्रजातंत्र के प्राण हैं। ये राजनीतिक दल सरकार पर अंकुश रखने का कार्य करते हैं और उचित जनमत बनाए रखने में सहायक हैं। कभी-कभी ऐसा भी देखा जाता है कि राजनीतिक दल तुच्छ स्वार्थवश झूठा प्रचार प्रसार कर जनता द्वारा स्थापित सरकार को गलत एवं अनुचित ढंग से उलझने और सत्ता हथियाने का कुत्सित प्रयास करने लगते हैं। ऐसी स्थिति में इनपर नियंत्रण रखना आवश्यक हो जाता है।

(10) राष्ट्रीय एकता की भावना – देश की जनता में राष्ट्रीय एकता की भावना होना प्रजातंत्र की सफलता के लिए आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता की भावना होने से जनता में जातीयता, प्रांतीयता एवं स्थानीयता आदि संकीर्णता के भाव उत्पन्न नहीं हो पाते। राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत व्यक्ति देश की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार रहता है।

(11) स्वतंत्र-विचार-विमर्श – प्रजातंत्र में जनता पारस्परिक विचार विनिमय द्वारा अपने झगड़ों का निपटारा करे। हड़ताल या तालाबन्दी करके स्वयं कष्ट सहना एवं दूसरों को कष्ट देना प्रजातंत्र में उचित नहीं है। बात-बात में हड़ताल या तालाबंदी नहीं होना चाहिए। जब समस्या समाधान का कोई विकल्प न बचा हो, तब अंतिम में इसका सहारा लिया जा सकता है।

दिनांक 19.7.20

[illegible]